Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 10, Print Issue 2 - 2025, Pg. No. 12-15
Peer Reviewed Journal

Research Article

# नेपाल संकट : राजनीति और हिंसा- एक अध्ययन

**आशुतोष शरण**

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार ,

## I N F O

**E-mail Id:**
ashupkd13@gmail.com
**Orcid Id:**
https://orcid.org/0000-0009-9141-6740

Date of Submission: 2025-10-07

Date of Acceptance: 2025-11-10

## A B S T R A C T

नेपाल एक जटिल राजनीतिक संक्रमण के दौर से गुजर रहा है, जो पिछले दो दशकों से राजनीतिक संक्रमण, सामाजिक असंतोष और हिंसक आंदोलनों का केंद्र बना हुआ है। राजतंत्र से लोकतंत्र की ओर संक्रमण ने जहाँ एक ओर जन-भागीदारी को बढ़ावा दिया, वहीं दूसरी ओर भ्रष्टाचार, जवाबदेही की कमी और राजनीतिक अस्थिरता ने जनता को मोहभंग की स्थिति में पहुँचा दिया। हाल के वर्षों में भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और जवाबदेही की कमी ने युवाओं, विशेषकर 'जेनरेशन Z' को सड़कों पर उतरने को मजबूर किया। यह शोध आलेख नेपाल के ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में वर्तमान संकट का विश्लेषण करता है, जिसमें हिंसा, जनाक्रोश और लोकतंत्र की चुनौतियाँ प्रमुख है। इस आलेख का उद्देश्य नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता के कारणों को समझना, हिंसा के स्वरूपों का विश्लेषण करना और संभावित समाधान प्रस्तुत करना है। नेपाल में हिंसा केवल राजनीतिक सत्ता के लिए एक उपकरण नहीं रही है, बल्कि यह गहरी संरचनात्मक समस्याओं का एक विस्फोटक परिणाम भी है, जिनमें सामाजिक-आर्थिक असमानताएं, जाति-आधारित भेदभाव, क्षेत्रीय असंतुलन और राजनीतिक बहिष्करण प्रमुख है। यह अध्ययन ऐतिहासिक विश्लेषण, राजनीतिक सिद्धांत, समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण और समकालीन टिप्पणियों का संश्लेषण कर नेपाल के संकट की एक व्यापक और सूक्ष्म समझ प्रदान करने का प्रयास करता है।

**प्रमुख शब्द:** नेपाल, राजतंत्र, लोकतंत्र, माओवादी विद्रोह, राजनीतिक संकट, जेन Z आंदोलन।


*Copyright (c) 2025: Author(s). Published by Advanced Research Publications*

## परिचयात्मक

नेपाल का राजनीतिक इतिहास एक जटिल और बहुआयामी है, जो राजतंत्र से लेकर लोकतंत्र तक और अब एक युवा-प्रेरित जनाक्रोश की ओर उन्मुख हुई हैं। नेपाल ने एक सदी से अधिक समय तक शाह वंश के निरंकुश राजतंत्र से लेकर एक बहुदलीय लोकतंत्र और फिर एक संघीय गणराज्य तक की एक उथल-पुथल भरी यात्रा तय की है। इस यात्रा की विशेषता निरंतर राजनीतिक अस्थिरता, वैचारिक संघर्ष और व्यापक हिंसा रही है। 18वीं शताब्दी में पृथ्वी नारायण शाह द्वारा एकीकृत नेपाल ने राजतंत्र की नींव रखी।[i] 1990 के जनआंदोलन ने संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना की और 2006 के जनविरोध ने पूर्ण लोकतंत्र की मांग को बल दिया। 2008 में राजशाही का अंत हुआ और नेपाल एक संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य बना। लेकिन लोकतंत्र की स्थापना के बाद भी राजनीतिक अस्थिरता, भ्रष्टाचार और सामाजिक असंतोष ने देश को स्थायित्व नहीं दिया। 2025 में 'जेनरेशन Z' द्वारा नेतृत्व किए गए आंदोलन ने इस असंतोष को एक निर्णायक मोड़ पर पहुँचा दिया। सितंबर 2025 में नेपाल एक अभूतपूर्व राजनीतिक संकट में घिर गया, जब सरकार ने 26 प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर प्रतिबंध लगा दिया। यह निर्णय 'जेनरेशन Z' द्वारा नेतृत्व किए गए एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन का ट्रिगर बना, जिसमें भ्रष्टाचार, जवाबदेही की कमी और लोकतंत्र के पतन के खिलाफ व्यापक विरोध हुआ।[ii]

हिमालय की गोद में बसा नेपाल, अपनी प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए जाना जाता है, लेकिन इसका राजनीतिक इतिहास उतना शांत नहीं रहा है। पिछली शताब्दी में, नेपाल ने कई राजनीतिक प्रयोगों, क्रांतियों और हिंसक संघर्षों का अनुभव किया है। एक पृथक और रहस्यमयी साम्राज्य से एक आधुनिक संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य तक का इसका परिवर्तन रक्तरंजित और संघर्षपूर्ण रहा है, जिसके निशान आज भी नेपाली समाज और राजनीति पर स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। नेपाल का राजनीतिक संकट केवल सत्ता के हस्तांतरण या शासन प्रणालियों के परिवर्तन तक सीमित नहीं है। यह पहचान, समानता, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय आत्म-निर्णय के लिए एक गहरे और निरंतर संघर्ष को दर्शाता है, जो देश के सामाजिक ताने-बाने में गहराई से निहित है।

2008 में 240 साल पुरानी शाह राजशाही का अंत निस्संदेह नेपाली इतिहास में एक युगांतकारी घटना थी, जिसने सामंतवाद के एक लंबे अध्याय को समाप्त कर दिया। हालाँकि, इस ऐतिहासिक उपलब्धि ने देश को स्थायी शांति और स्थिरता के उस युग में प्रवेश नहीं कराया जिसकी कई लोगों ने आशा की थी। राजशाही के पतन के बाद का युग राजनीतिक विखंडन, विचारधारात्मक भ्रम, संवैधानिक गतिरोध और शासन की गंभीर विफलता से चिह्नित रहा है। इस निरंतर अस्थिरता की जड़ें देश के अतीत में बहुत गहरी हैं। 1996 से 2006 तक चले माओवादी विद्रोह, जिसे 'जनयुद्ध' का नाम दिया गया, ने न केवल 13,000 से अधिक लोगों की जान ली और हजारों को विस्थापित किया, बल्कि इसने नेपाली समाज और राजनीति की नींव को मौलिक रूप से हिलाकर रख दिया।[iii] यह विद्रोह केवल सत्ता पर कब्जा करने का एक सशस्त्र प्रयास नहीं था, बल्कि यह सदियों से चले आ रहे सामंती उत्पीड़न, ग्रामीण गरीबी, भूमिहीनता, जातीय भेदभाव और राजनीतिक उपेक्षा के खिलाफ एक हिंसक और विनाशकारी प्रतिक्रिया थी।

वर्तमान समय में जब नेपाल एक नाजुक शांति और एक महत्वाकांक्षी संघीय लोकतांत्रिक ढांचे के साथ आगे बढ़ने का प्रयास कर रहा है, तो पुरानी समस्याएं, नए और अधिक जटिल रूपों में फिर से प्रकट हो रही है। व्यापक भ्रष्टाचार, राजनीतिक गठजोड़ में बेशर्म अवसरवाद, आर्थिक ठहराव और युवाओं के लिए अवसरों की कमी ने जनता में, विशेषकर युवा पीढ़ी में, गहरा मोहभंग और आक्रोश पैदा किया है। इसी सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ में 'जेन Z' या युवा पीढ़ी के नेतृत्व वाले नए प्रकार के आंदोलन उभरे हैं। ये आंदोलन पारंपरिक राजनीतिक दलों को दरकिनार करते हुए लामबंदी और संचार के लिए सोशल मीडिया का प्रभावी ढंग से उपयोग कर रहे हैं और पारदर्शिता, जवाबदेही और सुशासन की पुरजोर मांग कर रहे हैं यह शोध आलेख नेपाल में राजनीति और हिंसा के बीच के द्वंद्वात्मक और सहजीवी संबंध की गहन पड़ताल करता है।

यह राजशाही के स्वर्ण युग से लेकर उसके पतन, माओवादी विद्रोह के उदय और पतन और उसके बाद के शांति काल तक के ऐतिहासिक विकास का एक आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करेगा।

इसका मुख्य उद्देश्य उन अंतर्निहित सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक संरचनात्मक कारकों का विश्लेषण करना है, जिन्होंने नेपाल में बार-बार हिंसक संघर्षों को जन्म दिया है। यह आलेख यह समझने का प्रयास करेगा कि कैसे हिंसा ने राजनीतिक प्रक्रियाओं को आकार दिया है और कैसे राजनीतिक विफलताओं ने हिंसा के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा की हैं। अंततः यह वर्तमान में युवा आंदोलनों की भूमिका और देश के अनिश्चित राजनीतिक भविष्य के लिए उनके गहरे निहितार्थों का मूल्यांकन करेगा।

## अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य नेपाल के राजनीतिक परिदृश्य में संकट और हिंसा की भूमिका का एक व्यापक और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं:-

- **ऐतिहासिक संदर्भ का विश्लेषण:** नेपाल में राजतंत्र की संस्था, उसके पतन के कारणों और नेपाली राजनीति पर उसके स्थायी प्रभाव का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।
- **हिंसा के मूल कारणों की पड़ताल:** विद्रोह के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और वैचारिक कारणों की गहन जांच करना और यह समझना कि इसने नेपाली राज्य और समाज को कैसे रूपांतरित किया।
- **समकालीन चुनौतियों का मूल्यांकन:** शांति प्रक्रिया के बाद नेपाल में राजनीतिक अस्थिरता, शासन की चुनौतियों और भ्रष्टाचार के मुद्दों का मूल्यांकन करना।
- **नई पीढ़ी के आंदोलनों का अध्ययन:** नेपाल की राजनीति में 'जेन Z' पीढ़ी द्वारा चलाए जा रहे आंदोलनों के उदय, उनके तरीकों, मांगों और प्रभाव का विश्लेषण करना तथा यह समझना कि वे पारंपरिक राजनीति को कैसे चुनौती दे रहे हैं।
- **राजनीति और हिंसा के संबंध को समझना:** उपरोक्त सभी बिंदुओं का संश्लेषण करके यह निष्कर्ष निकालना कि नेपाल में राजनीतिक प्रक्रियाएं और हिंसक संघर्ष एक-दूसरे को कैसे प्रभावित और आकार देते रहे हैं।

## ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: राजतंत्र से लोकतंत्र तक

नेपाल में राजशाही की नींव पृथ्वी नारायण शाह ने 1768 में रखी।[iv] राणा शासन (1846–1951) ने राजाओं को नाममात्र का बना दिया। 1990 में जनआंदोलन के बाद संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना हुई। 2001 में राजपरिवार की हत्या और 2006 के जनविरोध ने राजशाही को कमजोर किया। 2008 में राजशाही का औपचारिक अंत हुआ और नेपाल एक संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य बना। हालाँकि लोकतंत्र की स्थापना के बाद भी राजनीतिक अस्थिरता बनी रही। 2008 से 2025 तक नेपाल में 14 प्रधानमंत्री बदले गए। यह अस्थिरता जनता के विश्वास को कमजोर करती रही।

## नेपाल का राजतंत्र: देवत्व से पतन तक

नेपाल का आधुनिक राजनीतिक इतिहास शाह वंश के उदय के साथ अटूट और अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है। 1768 में गोरखा के राजा पृथ्वी नारायण शाह द्वारा काठमांडू घाटी पर विजय और उसके बाद छोटे-छोटे राज्यों के एकीकरण ने आधुनिक नेपाल की नींव रखी। इस एकीकरण के बाद, शाह राजाओं ने देश पर शासन किया और उनकी सत्ता को हिंदू धर्म की गहरी मान्यताओं से वैधता प्राप्त हुई। राजा को भगवान विष्णु का अवतार माना जाता था, जिससे उन्हें एक दैवीय अधिकार मिलता था

जो उनकी राजनीतिक शक्ति को सवालों से परे बनाता था ।[v] यह दैवीय वैधता राजशाही के लिए एक शक्तिशाली कवच थी, जिसने इसे सदियों तक नेपाली जनमानस में एक विशेष स्थान दिया।

हालांकि, 1846 में 'कोत पर्व' नरसंहार के बाद, जंग बहादुर राणा ने सत्ता पर कब्जा कर लिया और वंशानुगत प्रधानमंत्रियों की एक प्रणाली स्थापित की । अगले 104 वर्षों तक (1846-1951), शाह राजा केवल नाममात्र के शासक बने रहे, जबकि वास्तविक शक्ति राणाओं के हाथों में केंद्रित थी। इस अवधि में नेपाल बाहरी दुनिया से लगभग पूरी तरह से कट गया और समाज में कोई महत्वपूर्ण सुधार नहीं हुआ। 1951 में राणा शासन के अंत के बाद, राजा त्रिभुवन ने लोकतंत्र की स्थापना का वादा किया, लेकिन उनके उत्तराधिकारियों, विशेष रूप से राजा महेंद्र और राजा बीरेंद्र के तहत, राजशाही ने अपनी शक्ति को मजबूत करने का प्रयास किया।

1960 में राजा महेंद्र ने नेपाल की नवोदित संसदीय प्रणाली को भंग कर दिया, राजनीतिक दलों पर प्रतिबंध लगा दिया और 'पार्टीलेस' पंचायत प्रणाली की शुरुआत की, जो वास्तव में एक निरंकुश राजशाही थी।[vi] यह प्रणाली तीन दशकों तक चली, जिसने राजनीतिक विकास को अवरुद्ध किया और असंतोष को बढ़ावा दिया।

राजशाही के पतन के बीज 1990 के पहले 'जन आंदोलन' में बोए गए थे, जिसने राजा बीरेंद्र को एक संवैधानिक राजतंत्र को स्वीकार करने और बहुदलीय लोकतंत्र को बहाल करने के लिए मजबूर किया। हालांकि, शाही शक्ति की अवशिष्ट भूमिका और सेना पर राजा का नियंत्रण एक निरंतर तनाव का स्रोत बना रहा। 1 जून, 2001 को हुआ शाही नरसंहार, जिसमें राजा बीरेंद्र और उनके परिवार के अधिकांश सदस्यों की हत्या कर दी गई, एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इस घटना ने राजशाही की रहस्यमय और दैवीय छवि को चकनाचूर कर दिया।[vii]

राजा ज्ञानेंद्र, जो अपने भाई की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठे, ने कभी भी जनता का विश्वास हासिल नहीं किया। उनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं और 2005 में लोकतंत्र को फिर से निलंबित करने और सीधी सत्ता संभालने के उनके कदम ने उन्हें बेहद अलोकप्रिय बना दिया। इस कदम ने माओवादी विद्रोहियों और मुख्यधारा के राजनीतिक दलों को एक साथ ला दिया, जिससे 2006 का दूसरा 'लोकतंत्र आंदोलन' हुआ।[viii] इस आंदोलन की सफलता ने अंततः 2008 में संविधान सभा द्वारा राजशाही के उन्मूलन और नेपाल के एक संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य बनने का मार्ग प्रशस्त किया।

## लोकतांत्रिक इतिहास: संघर्ष और मोहभंग

1950-51 में, भारत के समर्थन से, राजा त्रिभुवन और नवगठित राजनीतिक दलों (मुख्य रूप से नेपाली कांग्रेस) ने मिलकर राणा शासन के खिलाफ एक क्रांति का नेतृत्व किया, जिसके परिणामस्वरूप राणाओं का पतन हुआ। राजा त्रिभुवन ने एक संविधान सभा के माध्यम से लोकतंत्र की स्थापना का वादा किया। लेकिन 1955 में उनकी मृत्यु के बाद, उनके पुत्र राजा महेंद्र की राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं लोकतंत्र के लिए घातक साबित हुई। 1959 में हुए पहले आम चुनाव में नेपाली कांग्रेस को भारी बहुमत मिला और बी.पी. कोइराला प्रधानमंत्री बने। लेकिन उनकी प्रगतिशील नीतियों, विशेष रूप से भूमि सुधारों ने, पारंपरिक अभिजात वर्ग और स्वयं राजा को चिंतित कर दिया। दिसंबर 1960 में, राजा महेंद्र ने "लोकतंत्र के नेपाली मिट्टी के लिए अनुपयुक्त" होने का हवाला देते हुए, निर्वाचित सरकार को भंग कर दिया, संसद को निलंबित कर दिया और सभी राजनीतिक दलों पर प्रतिबंध लगा दिया। (Whelpton, 2005)

राजा महेंद्र ने 'पार्टीलेस' पंचायत प्रणाली की शुरुआत की, जो सतह पर तो विकेंद्रीकरण का एक स्वदेशी मॉडल लगती थी, लेकिन वास्तव में यह एक ऐसी व्यवस्था थी जो सारी शक्ति राजा के हाथों में केंद्रित करती थी। (Hutt, 2004) इस तीन दशक लंबी अवधि ने नेपाल के राजनीतिक विकास को अवरुद्ध कर दिया, नागरिक स्वतंत्रता का दमन किया और एक भूमिगत राजनीतिक विपक्ष को जन्म दिया। इस प्रणाली ने एक वफादार नौकरशाही और सुरक्षा तंत्र का निर्माण किया जो सीधे महल के प्रति जवाबदेह था, जिससे राज्य और राजशाही के बीच की रेखा धुंधली हो गई।

लोकतंत्र की बहाली के लिए वास्तविक संघर्ष 1990 में हुआ, जब नेपाली कांग्रेस और संयुक्त वाम मोर्चा के नेतृत्व में एक बड़े पैमाने पर लोकप्रिय आंदोलन ('जन आंदोलन I') ने राजा को एक संवैधानिक राजतंत्र बनने और बहुदलीय प्रणाली को फिर से शुरू करने के लिए मजबूर किया।

उन्होंने पंचायत प्रणाली को समाप्त कर दिया और एक संवैधानिक राजतंत्र के तहत बहुदलीय लोकतंत्र की बहाली को स्वीकार कर लिया। 1990 का दशक संसदीय लोकतंत्र का युग था, लेकिन यह भ्रष्टाचार, राजनीतिक अस्थिरता और सत्ता के लिए पार्टियों के बीच अंतहीन खींचतान से ग्रस्त था।[ix] सरकारें जल्दी-जल्दी बदलती रहीं, और आम लोगों की बुनियादी जरूरतों, जैसे कि गरीबी, असमानता और ग्रामीण विकास की उपेक्षा की गई। इसी राजनीतिक मोहभंग और शासन की विफलता की पृष्ठभूमि में 1996 में माओवादी विद्रोह शुरू हुआ। लोकतंत्र वादों को पूरा करने में विफल रहा, जिससे कट्टरपंथी वामपंथी विचारधारा के लिए एक उर्वर भूमि तैयार हुई।

1 जून, 2001 को हुआ रहस्यमयी शाही नरसंहार राजशाही के ताबूत में आखिरी कील साबित हुआ। इस घटना में, राजा बीरेंद्र, रानी ऐश्वर्या और उनके परिवार के अधिकांश सदस्यों की गोली मारकर हत्या कर दी गई। आधिकारिक तौर पर इसके लिए युवराज दीपेंद्र को जिम्मेदार ठहराया गया, लेकिन नेपाली जनता ने इस कहानी पर कभी पूरी तरह से विश्वास नहीं किया। इस नरसंहार ने राजशाही के आस-पास के रहस्य और देवत्व के आभामंडल को हमेशा के लिए नष्ट कर दिया।

राजा ज्ञानेंद्र, जो अपने भाई की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठे, में अपने पूर्ववर्तियों के राजनीतिक कौशल और लोकप्रिय अपील का अभाव था। उनकी सत्तावादी प्रवृत्तियों और माओवादी विद्रोह से निपटने में राजनीतिक दलों की विफलता का लाभ उठाते हुए, उन्होंने फरवरी 2005 में पूरी तरह से सत्ता अपने हाथ में ले ली, जिससे लोकतंत्र का दूसरा अध्याय भी समाप्त हो गया, यह उनका सबसे बड़ा रणनीतिक कुप्रबंधन था। उनके इस कदम ने माओवादी विद्रोहियों और मुख्यधारा के सात राजनीतिक दलों को एक साथ आने पर मजबूर कर दिया, जिससे 2006 के दूसरे 'लोकतंत्र आंदोलन' की नींव पड़ी। इस सफल आंदोलन के दबाव में, राजा ज्ञानेंद्र को सत्ता छोड़नी पड़ी। 28 मई, 2008 को, नवनिर्वाचित संविधान सभा ने अपने पहले सत्र में भारी बहुमत से 240 साल पुरानी राजशाही को समाप्त कर दिया और नेपाल को एक संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित कर दिया।[x]

2006 का दूसरा लोकतंत्र आंदोलन ('जन आंदोलन II') पहले की तुलना में बहुत बड़ा और अधिक निर्णायक था।[xi] यह राजा ज्ञानेंद्र के प्रत्यक्ष शासन के खिलाफ एक सहज विद्रोह था, जिसमें लगभग सभी राजनीतिक दल, नागरिक समाज और आम जनता शामिल थी। इस आंदोलन ने न केवल राजशाही को समाप्त किया, बल्कि एक नए, अधिक समावेशी नेपाल की नींव भी रखी। इसके परिणामस्वरूप एक संविधान सभा का चुनाव हुआ जिसका कार्य एक नया संविधान लिखना था।

हालांकि, संविधान निर्माण की प्रक्रिया लंबी और विवादास्पद थी। जातीयता, संघवाद, और शासन के स्वरूप जैसे मुद्दों पर राजनीतिक दलों के बीच गहरे मतभेद थे। अंततः, 2015 में एक नया संविधान प्रख्यापित किया गया, जिसने नेपाल को एक संघीय, धर्मनिरपेक्ष, समावेशी, लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया। लेकिन इस संविधान का भी मधेशी और थारू जैसे कुछ जातीय समूहों द्वारा विरोध किया गया, जिन्होंने महसूस किया कि उनकी आकांक्षाओं को नजरअंदाज कर दिया गया है। आज भी, नेपाल का लोकतंत्र संक्रमणकालीन चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिसमें संघीय ढांचे को लागू करना, राजनीतिक स्थिरता बनाए रखना और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना शामिल है।

## हिंसा का अध्याय: माओवादी विद्रोह

नेपाल में राजनीति और हिंसा के बीच का संबंध 1996 से 2006 तक चले 'जनयुद्ध' के दौरान सबसे स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ। नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) द्वारा शुरू किया गया यह विद्रोह नेपाली इतिहास का सबसे हिंसक अध्याय था। माओवादियों का घोषित लक्ष्य राजशाही को उखाड़ फेंकना और एक साम्यवादी 'जन गणराज्य' की स्थापना करना था।[xii]

विद्रोह के कारण बहुआयामी थे। वैचारिक रूप से, यह चीन के माओ-त्से-तुंग की शिक्षाओं से प्रेरित था। हालाँकि, इसकी वास्तविक जड़ें नेपाल की गहरी सामाजिक-आर्थिक समस्याओं में थीं:-

- **ग्रामीण गरीबी और असमानता:** नेपाल के दूरदराज के ग्रामीण इलाकों में अत्यधिक गरीबी, भूमिहीनता और राज्य की उपेक्षा थी। माओवादियों ने इन क्षेत्रों में आधार बनाया, जहाँ लोगों को लगा कि काठमांडू में सरकार ने उन्हें छोड़ दिया है।
- **जातीय और जातिगत भेदभाव:** नेपाल एक बहु-जातीय और बहु-जातीय देश है, लेकिन सत्ता पारंपरिक रूप से उच्च-जाति के पहाड़ी अभिजात वर्ग के हाथों में केंद्रित रही है। माओवादियों ने हाशिए पर पड़े जातीय समूहों (जनजाति) और निचली जातियों (दलितों) को लामबंद किया, उन्हें समानता और स्वायत्तता का वादा किया।[xiii]
- **राजनीतिक विफलता:** 1990 के दशक की लोकतांत्रिक सरकारें भ्रष्टाचार और अक्षमता में डूबी हुई थीं, जिससे जनता में व्यापक निराशा थी। माओवादियों ने खुद को इस सड़ी-गली व्यवस्था के एक क्रांतिकारी विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया।

विद्रोह क्रूर था, जिसमें दोनों पक्षों - माओवादी विद्रोहियों और राज्य की सुरक्षा बलों - द्वारा मानवाधिकारों का गंभीर उल्लंघन किया गया। माओवादियों ने जबरन भर्ती, अपहरण और हत्याओं का सहारा लिया, जबकि राज्य बलों पर न्यायेतर हत्याओं, यातना और गायब होने का आरोप लगाया गया। संघर्ष ने ग्रामीण इलाकों को तबाह कर दिया, विकास को रोक दिया और हजारों लोगों को विस्थापित कर दिया।

2006 में, लोकतंत्र आंदोलन की सफलता के बाद, माओवादियों और नई सरकार के बीच एक व्यापक शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते ने औपचारिक रूप से युद्ध को समाप्त कर दिया। माओवादी मुख्यधारा की राजनीति में शामिल हो गए, चुनावों में भाग लिया और यहां तक कि सरकार का नेतृत्व भी किया। उनके लड़ाकों को या तो सेना में एकीकृत किया गया या पुनर्वास पैकेज दिए गए। यद्यपि युद्ध समाप्त हो गया है, इसके निशान अभी भी गहरे हैं। संक्रमणकालीन न्याय (सत्य और सुलह) की प्रक्रिया धीमी और अधूरी बनी हुई है, और कई पीड़ित अभी भी न्याय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। विद्रोह ने नेपाली राजनीति को हमेशा के लिए बदल दिया, इसने हाशिए पर पड़े समूहों को आवाज दी और देश के राजनीतिक विमर्श में समावेशिता और सामाजिक न्याय के सवालों को केंद्र में ला दिया।

## वर्तमान परिदृश्य और जेन Z आंदोलन

शांति प्रक्रिया और एक नए संविधान की स्थापना के बावजूद, नेपाल की राजनीति पुरानी बीमारियों से ग्रस्त है। राजनीतिक अस्थिरता एक आदर्श बन गई है, जिसमें सत्ता के लिए पार्टियों के बीच लगातार सौदेबाजी होती रहती है। भ्रष्टाचार सार्वजनिक जीवन में व्याप्त है और आर्थिक विकास धीमा है, जिससे युवाओं के लिए अवसरों की कमी हो गई है। इस निराशाजनक पृष्ठभूमि में, एक नई तरह की राजनीतिक सक्रियता उभर रही है, जिसका नेतृत्व युवा पीढ़ी, या 'जेन Z' कर रही है। जेनरेशन Z, यानी 1996–2012 के बीच जन्मे युवा, डिजिटल युग में पले-बढ़े हैं। वे पारंपरिक राजनीतिक संरचनाओं से असंतुष्ट हैं और सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी आवाज बुलंद करते हैं। 'Nepo Babies', 'Corrupt Netas' जैसे हैशटैग ट्रेंड हुए। Next Generation Nepal जैसे पेजों ने आंदोलन को वैचारिक दिशा दी।[xiv]

4 सितंबर 2025 को नेपाल सरकार ने 26 सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर प्रतिबंध लगा दिया, जिसमें Facebook, Instagram, WhatsApp, X और YouTube शामिल थे।[xv] सरकार ने इसे "पंजीकरण नियमों के उल्लंघन" बताया, लेकिन जनता ने इसे असहमति को दबाने का प्रयास माना। सरकार ने इंटरनेट बंद कर दिया, कर्फ्यू लगाया और मीडिया पर अंकुश लगाया। यह प्रतिक्रिया लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ थी जिसके कारण जनता में और अधिक असंतोष फैल गया। इसके बाद आंदोलन की शुरुआत हुई। 8 सितंबर को पुलिस गोलीबारी में 19 प्रदर्शनकारियों की मौत हुई और 300 से अधिक घायल हुए।[xvi] 9 सितंबर को संसद भवन, जेल, नेताओं के घरों पर हमला हुआ। यह आंदोलन केवल डिजिटल नहीं रहा, बल्कि सड़कों पर भी उतरा। ये आंदोलन पारंपरिक राजनीतिक दलों और उनकी विचारधाराओं से मोहभंग का प्रतीक है।

वे किसी एक नेता या पार्टी से नहीं बंधे हैं, बल्कि विशिष्ट मुद्दों पर केंद्रित है। आंदोलन के दौरान राजधानी काठमांडू समेत कई शहरों में आगजनी और तोड़फोड़ हुई। पूर्व प्रधानमंत्री खनाल की पत्नी की मृत्यु हुई, विदेश मंत्री घायल हुए।

नक्कू सेंट्रल जेल जलाकर रवि लामिछाने को रिहा किया गया। प्रदर्शनकारियों ने संसद भवन, जेल, और नेताओं के घरों पर हमला किया। इन हिंसक आन्दोलन के बाद सेना ने नियंत्रण संभाला और पहली बार राजनीतिक वार्ता में सक्रिय भूमिका निभाई। 9 सितंबर को प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली ने इस्तीफा दे दिया। 12 सितंबर को पूर्व मुख्य न्यायाधीश सुशीला कार्की को अंतरिम प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया।

'जेन Z' आन्दोलन के प्रमुख कारणों को निम्न रूपों में देखा जा सकता है-

- **'इनफ इज इनफ' (Enough is Enough) अभियान:** 2020 में, COVID-19 महामारी के प्रति सरकार की अपर्याप्त प्रतिक्रिया के खिलाफ युवाओं ने स्वतःस्फूर्त विरोध प्रदर्शन शुरू किया। उन्होंने बेहतर परीक्षण, संगरोध सुविधाओं और सरकारी खर्च में पारदर्शिता की मांग की। यह आंदोलन पूरी तरह से गैर-पक्षपातपूर्ण था और फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफार्मों के माध्यम से आयोजित किया गया था।[xvii]
- **स्वतंत्र उम्मीदवारों का उदय (2022):** 2022 के स्थानीय चुनावों में, काठमांडू के मेयर के रूप में रैपर से नेता बने बालेन शाह और धरान के मेयर के रूप में हरका साम्पांग जैसे स्वतंत्र उम्मीदवारों की जीत ने एक राजनीतिक भूचाल ला दिया। उनकी जीत को स्थापित राजनीतिक दलों के खिलाफ एक मजबूत विरोध मत के रूप में देखा गया। उन्होंने शासन के पारंपरिक तरीकों को चुनौती देने के लिए सोशल मीडिया का बड़े पैमाने पर उपयोग किया और युवाओं के बीच भारी समर्थन हासिल किया।
- **भ्रष्टाचार विरोधी प्रदर्शन:** बर्लिन स्थित निगरानी संस्था ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल द्वारा जारी सूचकांक 2024 के अनुसार, नेपाल एशिया और दुनिया के सबसे भ्रष्ट देशों में शुमार है, जो 180 देशों की सूची में 107वें स्थान पर था।[xviii]

  युवा कार्यकर्ता नियमित रूप से भ्रष्टाचार घोटालों, विशेष रूप से राजनीतिक अभिजात वर्ग से जुड़े घोटालों के खिलाफ सड़कों पर उतरते हैं। वे एक मजबूत और स्वतंत्र भ्रष्टाचार विरोधी निकाय (CIAA) की मांग करते हैं और राजनीतिक नियुक्तियों में भाई-भतीजावाद का विरोध करते हैं।
- **पर्यावरण और शहरी मुद्दे:** काठमांडू जैसे शहरों में, युवा वायु प्रदूषण, अनियोजित शहरीकरण और सार्वजनिक स्थानों के अतिक्रमण जैसे मुद्दों पर भी सक्रिय हैं।

ये 'जेन Z' आंदोलन कई मायनों में पिछले आंदोलनों से अलग हैं। वे वैचारिक रूप से कठोर होने के बजाय मुद्दा-आधारित है। वे श्रेणीबद्ध संगठनात्मक संरचनाओं से बचते हैं और विकेंद्रीकृत नेटवर्क पर भरोसा करते हैं। उनकी भाषा और प्रतीक समकालीन और वैश्विक युवा संस्कृति से प्रभावित है। वे राजनीतिक विमर्श का एजेंडा तय कर रहे हैं, सुस्त राजनीतिक अभिजात वर्ग पर जवाबदेही का दबाव बना रहे हैं और एक ऐसी पीढ़ी में नागरिक चेतना को फिर से जागृत कर रहे हैं जिसे अक्सर उदासीन माना जाता था। वे नेपाल के लोकतंत्र के लिए एक नई, अप्रत्याशित और संभावित रूप से परिवर्तनकारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

हालांकि इन आंदोलनों ने अभी तक व्यवस्था में कोई बड़ा संरचनात्मक परिवर्तन नहीं किया है, लेकिन उनका महत्व निर्विवाद है। वे राजनीतिक अभिजात वर्ग पर दबाव बना रहे हैं और उन्हें जवाबदेह ठहरा रहे हैं। वे उन मुद्दों को राष्ट्रीय विमर्श में ला रहे हैं जिनकी पारंपरिक दल अक्सर उपेक्षा करते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे एक नई पीढ़ी के नागरिकों को राजनीतिक प्रक्रिया में शामिल कर रहे हैं, जो अन्यथा उदासीन और निराश महसूस कर सकते हैं। यह युवा ऊर्जा नेपाल के लोकतंत्र के लिए आशा की एक किरण प्रस्तुत करती है, जो यह दर्शाती है कि शासन में सुधार और न्याय की मांग अभी भी जीवित है।

## निष्कर्ष

नेपाल की राजनीतिक यात्रा संकट, संघर्ष और परिवर्तन की एक गाथा है। निरंकुश राजतंत्र के लंबे युग से लेकर एक बहुदलीय लोकतंत्र की स्थापना और एक दशक के क्रूर गृहयुद्ध से गुजरते हुए एक संघीय गणराज्य के रूप में इसके उद्भव तक, देश ने लगातार उथल-पुथल का अनुभव किया है।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नेपाल में राजनीति और हिंसा का संबंध गहरा और चक्रीय रहा है।

राजनीतिक सत्ता का केंद्रीकरण, चाहे वह राजशाही के तहत हो या एक संकीर्ण अभिजात वर्ग के तहत, ने हमेशा सामाजिक-आर्थिक असमानताओं, बहिष्करण और अन्याय को जन्म दिया है। यही अन्याय और वंचना की भावना अंततः हिंसक विद्रोह के रूप में प्रकट हुई है, जैसा कि माओवादी विद्रोह के मामले में देखा गया।

माओवादी विद्रोह केवल एक वैचारिक संघर्ष नहीं था, बल्कि यह उन लाखों नेपालियों की निराशा का हिंसक प्रकटीकरण था जिन्हें विकास और अवसरों से वंचित रखा गया था। इसने नेपाली समाज को स्थायी रूप से बदल दिया, हाशिए के समुदायों को सशक्त बनाया और राजनीति में समावेशिता की मांग को स्थापित किया। हालांकि, शांति प्रक्रिया के बाद का युग भी चुनौतियों से भरा रहा है। राजनीतिक अस्थिरता, भ्रष्टाचार और सुशासन की कमी ने लोकतंत्र के प्रति मोहभंग पैदा किया है। इसी निराशा के बीच, 'जेन Z' के नेतृत्व वाले नए युवा आंदोलन आशा की एक नई किरण के रूप में उभरे हैं। ये आंदोलन, जो सोशल मीडिया द्वारा संचालित और मुद्दा-आधारित हैं, पारंपरिक राजनीति की विफलताओं के प्रति एक प्रतिक्रिया है। वे पारदर्शिता, जवाबदेही और न्याय की मांग करके स्थापित राजनीतिक दलों को चुनौती दे रहे हैं। यद्यपि उनकी दीर्घकालिक सफलता अभी अनिश्चित है, लेकिन वे नेपाली लोकतंत्र में नागरिक जुड़ाव की एक नई लहर का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अंततः नेपाल एक चौराहे पर खड़ा है। इसने राजशाही और व्यापक सशस्त्र संघर्ष के सबसे बुरे दिनों को पीछे छोड़ दिया है, लेकिन एक स्थिर, समृद्ध और न्यायपूर्ण समाज का वादा अभी भी पूरा नहीं हुआ है। नेपाल का वर्तमान संकट केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी गहराता जा रहा है। जेनरेशन Z का आंदोलन लोकतंत्र को खत्म करने की नहीं, बल्कि उसे जवाबदेह और पारदर्शी बनाने की मांग करता है। यदि मौजूदा नेतृत्व जनता की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरता, तो राजशाही या अन्य वैकल्पिक व्यवस्थाओं की मांग फिर से जोर पकड़ सकती है। देश का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि क्या इसके राजनीतिक नेता अतीत की गलतियों से सीख सकते हैं, क्या वे भ्रष्टाचार को दूर कर सकते हैं और सुशासन प्रदान कर सकते हैं, और क्या वे युवा पीढ़ी की ऊर्जा और आकांक्षाओं को एक अधिक समावेशी और समृद्ध नेपाल बनाने के लिए सकारात्मक रूप से उपयोग कर सकते हैं। राजनीति और हिंसा के दुष्चक्र को तोड़ने के लिए, नेपाल को केवल राजनीतिक स्थिरता ही नहीं, बल्कि एक समावेशी, युवा-केंद्रित और भ्रष्टाचारमुक्त लोकतंत्र की दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे तथा सामाजिक न्याय व आर्थिक समानता पर आधारित एक सच्ची लोकतांत्रिक संस्कृति का निर्माण करना होगा।

## सन्दर्भ


1. https://www.bbc.com/hindi/articles/cwy9dpllelno Retrieved on 11-09-2025
2. 2025 Nepalese Gen Z Protests | Background, Social Media Ban, & Political Breakdown |Britannica Retrieved on 18-09-2025
3. शर्मा, निधि. राजशाही के अंत से गणतंत्र तक, नेपाल में 2008 से अब तक सत्ता की जंग क्यों नहीं थमी? - Panchdoot News Retrieved on 20-09-2025

4. [1] नेपाल में कैसे हुआ राजशाही का खात्मा, किसने किया रॉयल फैमिली का नरसंहार? जानें Gen-Z आंदोलन से पहले का इतिहास | Nepal Gen-Z Protest Social Media ban KP Sharma Oli Resigned how monarchy end royal family massacred Retrieved on 20-09-2025
5. Whelpton, John. (2005) A History of Nepal. Cambridge University Press. P.49
6. Hutt, M. (2004). Himalayan people's war: Nepal's Maoist rebellion. London: Hurst & Company. P.23
7. Thapa, D. & Sijapati, B. (2003). A kingdom under siege: Nepal's Maoist insurgency, 1996 to 2003. Kathmandu: The Print House. P.10-12
8. International Crisis Group. (2005). Nepal's Royal Coup: Making a Bad Situation Worse. Brussels: International Crisis Group. Report No. 91. Indonesia: Violence Erupts Again in Ambon
9. Baral, L. R. (2006). Opposition politics in Nepal. New Delhi: Foundation Books. P.15-18
10. Declaration of Federal Republic: Momentous Day Of Nepal's History. Retrieved on 21-09-2025
11. International Crisis Group. (2006). Nepal: From People Power to Peace. Brussels: International Crisis Group. Report No. 115. Nepal: From People Power to Peace? | International Crisis Group
12. International Crisis Group. (2005). Nepal's Maoists: Their Aims, Structure and Strategy. Brussels: International Crisis Group. Report No. 104. Nepal's Maoists: Their Aims, Structure and Strategy | International Crisis Group
13. Gellner, D. N. (2007). Resistance and the state: Nepalese struggles for recognition. New Delhi: Social Science Press. P.1-5
14. Nepal Gen Z protest: How flashy nepo kids have triggered protests - India Today Retrieved on 20-09-2025
15. https://www.bbc.com/hindi/articles/c930qrp0vvgo Retrieved on 14-09-2025
16. Nepal's 8 September massacre | Nepali Times Retrieved on 15-09-2025
17. Youth-led protests against the government's handling of Covid-19 spread to major cities Retrieved on 21-09-2025
18. Corruption Perceptions Index (2024). Corruption Perceptions Index 2024 - Transparency.org